मेरा गंदे हाथोवाला भाई

जनमदिन की शुभकामनाएँ नेहा। सुबह आँखे खोलते ही फोन की घंटी बजी। आज मेरा जनमदिन है। जनमदिन? वो क्या होता है? हर साल पंद्रह मार्च ही मेरे जिंदगी की सबसे बुरा दिन होता है। हर साल मैं चाहती थी कि मुझे मेरे पापा गले लगाकर मुझसे कहते "मेरी रानी बिटियाँ एक और साल बडी हो गई।" काश मेरे भाई जिसे मैं अपनी दुनियाँ मानती हूँ, मुझसे सीधे मुँह बात करते। काश... काश.. इसी काश के साथ हर साल मैं अपनी जनमदिन मनाती हूँ।

मेरी माँ। कौन है वो औरत? जिसे मैंने अपनी जिंदगी में कभी नही देखा। मैंने अपने भाई के मुँह से सुना है की मेरे पैदा होते ही मेरी माँ ये दुनिया छोडकर चली गई। इसलिए मुझे लगता है मेरे भाई मुझे 'मनहूस' कहता है। मुझे कभी माँ की याद नही आती। पता नहीं क्यो, पर मुझे ममता से बढकर भाई का प्यार और साथ चाहिए था। पर मेरा भाई, साथ तो क्या, मेरे तरफ प्यार भरे आँखो से देखता भी नही है।

कुछ दिन पहले मैं अपने दोस्तो के साथ के साथ स्कूल से वापस आ रही थी। स्कूल ही वह एक ही जगह है जहा मैं हसती-मुस्कुराती हूँ। उस दिन मेरा ड्राइवर नहीं आया था और दोस्तो के साथ मुझे पैदल चलना पडा। बाते करते-करते अचानक मैं एक पत्थर से टकराकर गिर गई। पहले तो मुझे कुछ समझ में नही आया फिर मुझे एहसास हुआ कि मेरे सर से खून बह रहा था और मेरा सफेद कपडा गंदा हो चुका था। अचानक मेरे आँखो से आँसू आने लगे। वह आँसू शायद चोट लगने की वजह से नहीं था लेकिन पापा की डाँट और दोस्तो की हंसी के वजह से था। अचानक मेरे सामने किसी ने हाथ बढाया। उसका हाथ तो बहुत गंदा था लेकिन मन जरूर साफ होगा। बिना उसका चेहरा देखे मैंने अपना हाथ उसे दे दिया। मेरे गिरे सामान उठाने के बाद मेरे आँखो की ओर देखकर मुस्कुराकर वह अन्जनबी चला गया। यह देख मेरे दोस्तो ने मुझे बहुत चिडाया लेकिन मेरे मन में उस गंदे हाथोंवाला अजनबी का चेहरा मेरे खयालों से जा ही नही रहा था।

(Note: Graded articles may be published in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

उस रात मैं अपने भाई को ~~इस~~ उस घटना के बारे में बताना चाहती थी। लेकिन ~~मुझ~~ मेरा कुछ कहने से पहले ही वह मुझ पे भटक पडा। बार-बार भाई माँ की मौत के बारे में बोलकर मुझसे झगडा कर रहा था। माँ सिर्फ भाई की थी? क्या सच में मैं माँ की गुनेकार थी? क्या सच मे मैं मनहूस हूँ? यह सारी बाते उस दिन मेरे दिमाग में था। लेकिन उस अजनबी का चेहरा मेरे दिल को ठंडक पहुँचाता था। क्यो यह अजनबी मेरे जिंदगी में इतना स्थान ले चुका था यह मैं समझ ही नही पायी।

अगले दिन मैं अपने ड्रायवर के साथ स्कूल जा रही थी। रास्ते में मैंने उसे देखा, उस गंदे हाथोवले अजनबी को किसी दुकान पर सफाई कर रहा था। स्कूल से वापस पैदल आने ~~की~~ के लिए मैं ने ट्यूशन के बाहने ड्रायवर को वापस भेज दिया। फिर दोस्तो के आने से पहले मैं वहाँ से चली गई। मेरा मन उस अजनबी की ओर खींची चली जा रही थी। उसे फिर मैंने देखा, वही पर लेकिन इस बार सफाई करते हुए नही ~~लेकिन~~ बल्कि चीजों को इकट्ठा करते हुए।

मुझे देखकर पहले तो वह चौंक गया। फिर मुस्कुराते हुए मेरी ओर चला आया। "कुछ तो बात है उसके मुस्कान में" मैंने अपने मन में कहा।

श्याम! श्याम था उसका नाम। छोटे से दुकान में काम करने वाला एक गरीब लड़का। ~~उसने मु~~ थोड़ी देर बातें करने के बाद ~~मैंने पूछा~~ श्याम ने पूछा "क्या तुम धन्यवाद कहने आई हो?"
"जी हाँ। ~~उ~~ कल मैं बोल नहीं पाई।" "क्या तुम मुझे अपने घर ले जासकते हो?"
मैं जानती थी की उसे यह सवाल बहुत ~~अ~~ अजीब लगा होगा। और उसके चेहरे में वह दिख भी रहा था। पहले तो वह हिचकिचाया लेकिन फिर उसने मुझे उसके घर में स्वागत किया।

एक छोटा सा मकान जिसकी दरवाजे और खिड़कियाँ टूटे हुए थे, और ज्यादा साफ भी नहीं था। छोटे ~~~~से दरवाजे से घुसने के बाद मैं उसकी माँ से मिली। ~~उन्हें~~ उन्हे देखकर हम गरीबी क्या होती है उसका साफ अंदाज़ा किया जा सकता था। जिसके पहले उसकी माँ कुछ कह सकी श्याम ~~~~ने उन्हे मेरे बारे मे

बताया। सारी बातें सुनने के बाद वह मुस्कुराती हुई मेरे पास आई और मुझे गले लगाई। उस दिन शायद मुझे मेरी माँ याद आई। बहुत देर मैंने श्याम और माँ की दुःख भरी कहानी सुनी। पर एक शब्द बोलने के बाद उनकी चेहरे की मुस्कान सिर्फ बह रही थी।

खाना खाने की बाद जब मैं ने बाहर देखा तो अंधेरा होने जा रहा था। मैं और देर नहीं ~~रुक~~ रह सकती थी। श्याम और माँ से ~~अलविदा~~ अल्विदा कहकर मैं घर की ओर बढ़ने लगी। तब पीछे मुड़कर देखा तो मैंने देखा की मेरे गंदे हाथो वाला अजनबी मेरे पीछे ही था। मेरे पास आकर मुझसे कहा "मैं हमेशा तेरे साथ हूँ बेहना"। सिर्फ थोड़ी देर की बातचीत में ही मेरे नए भाई, शायद असली वाले भाई ने मेरा हर दुःख को समझ लिया। जो शब्द मैं अपने सगे भाई से सुना चाहती थी वह मुझे एक अजनबी के मुँह से सुना। तब मेरे जिंदगी का सबसे बड़ा सवाल पैदा हुआ की "इनमें से कौन है मेरा भाई?" वो भाई जिनसे मेरा खून का रिश्ता था या वो जिसके पहले दिन से ही मेरा मन का रिश्ता था। उस दिन मैं समझ गई की भाई

का रिश्ता

खून का रिश्ता नहीं है बल्की वो रिश्ता है जहाँ डर या और नफरत की कोई जगह नहीं है।

आज मेरा उन्नीसवा जनमदिन है जिसे मैं उसी काश...के साथ मनाने वाली हूँ लेकिन मेरे अपने 'गंदेहाथों वाले भाई' के साथ।